(1)

B.A. Part I
Hindi Hons
Paper I
मध्यकालीन हिंदी काव्य
सूरदास

5/7/20 डॉ० [illegible] कुमार
हिंदी विभाग
[illegible] कॉलेज, [illegible]

सूर का वात्सल्य वर्णन, क्रमशः —

~~[illegible]~~ ।

खेलन को मैं दूर गयो ।
संग-संग बालक हैं तो बहुत आवेश भयो ॥

[illegible] कहती है कि तुम दूर [illegible] आज [illegible] हाऊ आया है —

खेलन दूर जात कित कान्हा ।
आज सुनो बन हाऊ आयो तुम नहीं जानत कान्हा ॥

कृष्ण संबंधी वात्सल्य को हम दो भागों में बाँट सकते हैं - संयोग और वियोग। संयोग वात्सल्य अक्रूर के गोकुल आने [illegible] के अन्तर्गत आता है [illegible] कृष्ण को मथुरा जाने के बाद का सारा वियोग वात्सल्य के अन्तर्गत आता है।

यशोदा के सामने अक्रूर के साथ मथुरा जा रहे हैं। यशोदा रो रही है, कलप रही है, सिसक रही है। उसकी छाती फट रही है। वह सब कुछ देने को तैयार है पर चाहती है कि मेरा कृष्ण मेरी आँखों के सामने रहे —

इतने ही सुन्दर कमल नयन को अखियन आगे देखौं ।

यशोदा की इस स्थिति को करुणा, दीनता, विवशता इत्यादि अपने उत्कर्ष पर है जो अपने आप में एक मिसाल है।

नन्द और यशोदा कृष्ण के वियोग में पागल से हो गये हैं। वे कान्ह-कान्ह की रट लगाते आँखों से अश्रु धार बहा रहे हैं —

नन्द जसोदा मारग जोहत नित उठि साँझ सवेरे ।
चहुँ दिसि कान्ह-कान्ह कहि टेरत अँसुवन बहत पनारे ॥

कृष्ण के बिना बालकपन की माता रोहिणी भी रो रही है —

जे दोउ भैया ब्रज के पालन कहत रोहिणी रोई ।

(2)

सूर का वात्सल्य क्रमशः

प्रश्न उठता है कि सूर को वात्सल्य वर्णन में इतनी सफलता क्यों मिली। इसका प्रथम उत्तर है कि सूर बाल मनोविज्ञान के चतुर चितेरे थे। बालकों के अन्तर्जगत में प्रवेश करने की इनमें अद्भुत क्षमता थी।

दूसरा यह कि सूर का वात्सल्य वर्णन अभिजात तत्वों से मुक्त है। सूर के कृष्ण मर्यादापुरुषोत्तम राम नहीं हैं। सूर के कृष्ण एक साधारण बालक हैं - जो चोरी भी करते हैं, मिट्टी खाते हैं, झूठ बोलते हैं, और माखन भी चुराते हैं;

तीसरा कारण यह कि सूर को मातृ हृदय प्राप्त था। माता का हृदय ही वात्सल्य भाव की पूरी झाँकी ले सकता है।

चौथा कारण यह कि सूर ने वात्सल्य के मध्य में यशोदा को लाकर खड़ा कर दिया है। यशोदा को उपालम्भ करके सूर का वात्सल्य वर्णन रात-रात सब ओर से उद्वेलित हो उठा है।

सूर के वात्सल्य वर्णन का अन्य कवियों से तुलना करने पर हम पाते हैं कि इस क्षेत्र में सूरदास श्रेष्ठ हैं। वाल्मीकि के काव्य में थोड़ा सा वात्सल्य वर्णन मिलता है जो सूर के सामने बहुत कम है। कम शब्दों में कालिदास ने जो वात्सल्य का चित्र खींचा है वह केवल पितृ-पुत्र भाव की नैसर्गिकता का चित्र है। सूर जैसी तन्मयता नहीं है। तुलसीदास ने जो कवितावली, श्रीकृष्ण गीतावली और रामचरित मानस में जो वात्सल्य का वर्णन किया है वह सूर के सामने नगण्य साबित हुआ है। हरिऔध ने प्रिय-प्रवास में कृष्ण के तथा गुप्त जी ने यशोधरा में राहुल के वात्सल्य का वर्णन किया है वह तो सूर का नकल मात्र है। गुप्त जी के राहुल तो काफी सयाने हैं जो हंस को मारने वाले तथा जिलाने वाले के अधिकार का विवेचन भी करते हैं। वर्ड्सवर्थ तथा लॉंगफेलो के बाल वर्णन में दार्शनिकता का पुट ज्यादा है। सूर जैसी तन्मयता वात्सल्य के क्षेत्र में किसी को नहीं मिली है।

अतः मैं स्पष्टतः कह सकता हूं कि सूर का दूसरा नाम वात्सल्य है और वात्सल्य का दूसरा नाम सूर है। सूर जैसा वात्सल्य वर्णन का चित्रकार आज तक दूसरा कोई न हो सका।